द्रव्य

द्रव्य दर्शनशास्त्र की एक मूलभूत समस्या है| प्राय: सभी दार्शनिकों ने इस विषय पर अपना विचार दिया है| द्रव्य की अवधारणा मूलभूत सत्ता की अवधारणा से भिन्न नहीं है | पाश्चात्य दार्शनिकों ने द्रव्य के संबंध में अपने भिन्न-भिन्न मत प्रस्तुत किए हैं| द्रव्य से तात्पर्य सत्ता से है जो विश्व की समस्त चीजों का मौलिक एवं स्थाई आधार है और जो स्वयं अपने आधार हो अर्थात जो खुद अपने से बाहर स्वतंत्र या परे किसी सत्ता पर आधारित नहीं हो| प्लेटो ने इसी अर्थ में प्रत्यय को द्रव्य कहा | अरस्तु ने एक अर्थ में तो विशिष्ट वस्तुओं को द्रव्य कहा परंतु मौलिक एवं वास्तविक अर्थ में आकारों को द्रव्य की संज्ञा दी| द्रव्य की अवधारणा बहुत स्पष्ट रूप में देकार्त तथा स्पिनोजा के दर्शनों में उभर कर हमारे सामने आती है|

देकार्त

द्रव्य की परिभाषा करते हुए देकार्त ने कहा कि द्रव्य वह है जिसका स्वत: अस्तित्व हो और जिसे अपने अस्तित्व के लिए अन्य किसी चीज के अस्तित्व पर निर्भर ना होना पड़े| द्रव्य की इस अर्थ में देकार्त के अनुसार वास्तव में सिर्फ एक ही द्रव्य हो सकता है और वह ईश्वर है| ईश्वर ही सभी चीजों का आधार है तथा खुद सिर्फ अपने आप पर आधारित है, अपने से बाहर किसी अन्य चीज पर नहीं| परंतु असंगत रूप से ईश्वर के अलावा जड़ द्रव्य तथा मन नामक दो और द्रव्यों को देकार्त ने स्वीकार कर लिया| देकार्त ईश्वरवादी हैं क्योंकि वे ईश्वर में विश्वास करते हैं तथा ईश्वर को जगत का निमित्त कारण मानते हैं| वे द्वैतवादी हैं क्योंकि वे चित अचित रूपी दो परस्पर स्वतंत्र किंतु ईश्वर परतंत्र तत्वों की पृथक पृथक सत्ता स्वीकार करते हैं | वे चित अचित संयोगवादी हैं क्योंकि उनके अनुसार इन दोनों तत्वों का एक दूसरे से सहयोग होता है और एक की क्रिया के कारण दूसरे में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है|

देकार्त ने पदार्थों के तीन विभाजन किए हैं द्रव्य, गुण और पर्याय| द्रव्य वह है जिसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता हो और जिसके ज्ञान के लिए किसी अन्य की अपेक्षा ना हो | देकार्त द्रव्य के अपृथकसिद्ध और स्वरूप धर्मों को गुण कहते हैं| उनके अनुसार अन्य आगंतुक धर्म पर्याय कहलाते हैं|

द्रव्य तत्व है क्योंकि उसकी वास्तविक और स्वतंत्र सत्ता है| देकार्त ने तीन तत्व माने हैं- ईश्वर, चित् और अचित और उनके दर्शन में इन तीन तत्वों पर है विचार किया गया है| सबसे पहले संदेह पद्धति द्वारा चित् की सत्ता स्वत: सिद्ध रूप में उपस्थित होती है | चैतन्य रूप आत्म तत्व का अपलाप नहीं किया जा सकता| "मैं ज्ञाता हूं, अत: मेरी सत्ता अनिवार्य है"| यह निर्विकल्प अनुभूति अबाधित है | देकार्त के अनुसार यह आत्मा जीव ही है | जीव परिमित है | उसका ज्ञान दर्शन और आनंद परिमित है | जीव अनेक हैं प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मा का ज्ञान निर्विकल्प अनुभूति से होती है और अन्य आत्माओं का निगमनात्मक अनुमान से | इस प्रकार देकार्त ने अनेकजीववाद सिद्ध किया | उनका चित तत्व विशुद्ध आत्मा नहीं है वह विशुद्ध चैतन्य और अंत:करण का मिश्रण है| वह जीवात्मा है|

इस प्रकार चित् की सिद्धि होते ही अचित की भी सिद्धि हो जाती है| चित, अचित का अनुभव करने के लिए ही है| चित आत्मा ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता है| अत: उसे जेय (gyey), कार्य और भोग्य की अपेक्षा है , यही अचित या जड़ तत्व है | ईश्वर ने इसकी सृष्टि की है अत: यह चित धोखा या भ्रम नहीं हो सकता|

इस प्रकार चित्और अचित इन दो तत्वों की सिद्धि होती है| दोनों द्रव्य हैं क्योंकि दोनों की एक दूसरे से स्वतंत्र सत्ता है दोनों परस्पर निरपेक्ष और विरुद्ध हैं | एक चेतन है दूसरा जड़| दोनों की पृथक और समान सत्ता है| अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर निर्भर नहीं रहते|

चित् की स्वत: सिद्धि का ज्ञान होते ही जैसे एक तरफ उसके जेय (gyey), कार्य भोग्य अचित्त की सिद्धि होती है, वैसे ही दूसरी ओर उसके नियंता और सृष्टिकर्ता ईश्वर की सत्ता भी साथ ही सिद्ध हो जाती है| ईश्वर चित् और अचित् दोनों के स्वामी और नियंता हैं|